बच्चे

खुशियों का संसार बच्चे,
खुशियों का संसार
झूमते गाते इठलाते,
सबको बाँटते प्यार
बच्चे खुशियों का संसार ।
छोटा-बड़ा, ऊँच-नीच न माने,
इनका सच्चा सरल व्यवहार,
बच्चे खुशियों का संसार ।
दिनभर इनके नाटक करतब,
ये बहुत बड़े फनकार
बच्चे खुशियों का संसार ।

मम्मी, पापा, चाचा, ताऊ
सबके गले का हार,
बच्चे खुशियों का संसार ।
झठ रूठते, पल में मन जाते,
ये अजब गजब सरकार
बच्चे खुशियों का संसार ।
रब ना मिलता कोई नहीं, बस
कर लो बच्चों का दीदार
बच्चे खुशियों का संसार ।

मेरा जीवन मेरी किताब

वक्त की किताब पर, मैं लिखता जा रहा
नम कलम की नोख से, मैं लिखता जा रहा ।
मन मेरा परेशान है, रात भी वीरान है
भाग-दौड़ भरा जहान है, यूँ ही चलता जा रहा ।
वक्त की किताब पर मैं लिखता जा रहा ।
खतरे में इन्सान है, इंसानीयत का तो दिखता नहीं निशान है
इस जगत की चालाकी से, मैं पिछड़ता जा रहा
वक्त की किताब पर मैं लिखता जा रहा ।
समय के इस चक्र में, कितने आए और गए
समय पर रुका नहीं,यूँ ही चलता जा रहा ।
सूर्य मेरे सिर पर है, धरा मेरे नीचे में है
मुझमे मेरा कुछ नहीं, सब समय के चक्र में है
किर भी मैं चलता जा रहा, फिर भी मैं चलता जा रहा ।
वक्त की किताब पर मैं लिखता जा रहा ।
कुछ नही है मुझमे पर, किर भी मैं भरा सा भरा
मन बड़ा शिथिल मेरा, कह रहा मुझसे मेरा
क्यूं तू चलता जा रहा, क्यूं तू चलता जा रहा ।
वक्त की किताब पर मैं लिखता जा रहा ।
उम्र के इस पड़ाव में, क्या सही है क्या गलत
इसी उलझन में मैं, रोज पिसता जा रहा ।
फिर अचानक से इक रोशनी दिखी मुझे
उस रोशनी की लो को नित, मैं पकड़ने जा रहा
वक्त की किताब पर मैं लिखता जा रहा
नम कलम की नोख से, मैं लिखता जा रहा ।

अजय कुमार
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक संस्कृत
केन्द्रीय विद्यालय, नामरूप